शव वाहन की आड़ में दूसरे संस्था की पर्ची काट रहे श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल से जुड़े लोग

सुकृत सेवा मंडल का नाम आया सामने, रसीद पर फोन नंबर अस्पताल का निकला

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल की कहानी खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। एक घोटाले की कहानी खत्म होती है तो फौरन दूसरा घोटाला सामने आ जाता है। श्रीराम के नाम पर चलने वाले इस अस्पताल में अब अधर्म का सहारा लेकर कमाई की जा रही है। जिसके तथ्यात्मक सबूत मिले हैं। क्या आप अंदाजा लगा सकते हैं कि कोई धार्मिक या सामाजिक संस्था शव वाहन के नाम पर भी कमाई कर सकती है। हालांकि कोरोनाकाल में जब तमाम संगठनों, संस्थाओं, निजी अस्पतालों ने अपने जमीर बेच दिए तो फरीदाबाद का पंजाबी समाज किस पर भरोसा करे। लेकिन श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल चलाने वाले इतनी निचली हरकत पर उतरेंगे, इसका अंदाजा किसी को नहीं होगा।

शव वाहन की पर्ची से कमाई

शव वाहन की पर्ची से कमाई और इसके लिए निकाली गई तरकीब हैरान करने वाली है। श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल का शव वाहन एनआईटी में अक्सर चलता हुआ नजर आता है। यह शव वाहन श्रीराम अस्पताल की प्रॉपर्टी है। इसे कन्हैया लाल खत्री की याद में समर्पित किया गया है। सेक्टर 55 में पिछले महीने एक मरीज की मौत हो गई। उसके परिवार ने श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल से शव वाहन की मांग की। श्रीराम अस्पताल का शव वाहन फौरन सेक्टर 55 पहुंचा और मरीज के शव को श्मशान घाट पहुंचा दिया। मरीज के परिवार

के नाम पर ही दी जानी चाहिए और उसके पैसे भी श्रीराम अस्पताल के पास आना चाहिए। शव वाहन को खत्री परिवार ने श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल को भेंट किया, क्योंकि शव वाहन पर कंवल खत्री के भाई स्व. कन्हैया लाल खत्री का नाम है। लेकिन किसी संस्था को भेंट करने के बाद आप उसके मालिक नहीं रहते, वो चीज संस्था की हो जाती है। लेकिन यहां तो कंवल खत्री ने भाई के नाम पर दान का नाम भी किया हुआ है और शव वाहन सेवा के नाम पर पैसे लेकर पर्ची सुकृत सेवा मंडल की काटी जा रही है। यह बहुत बड़ा फ्रॉड है, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि सुकृत सेवा मंडल की पर्चियों की आड़ में और भी गैर कानूनी कमाई की

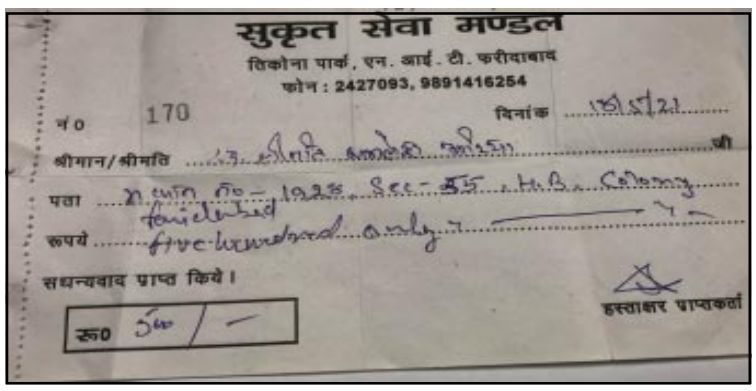

सुकृत सेवा मण्डल
तिकोना पार्क, एन. आई. टी. फरीदाबाद
फोन : 2427093, 9891416254
नं0 170 दिनांक 18/5/21
श्रीमान/श्रीमति ... श्री
पता ... Sec-55 ... Colony
रूपये ... Five hundred only
सधन्यवाद प्राप्त किये।
रू0 500/-
हस्ताक्षर प्राप्तकर्ता

को एक पर्ची थमाकर 500 रुपये श्रीराम अस्पताल की सेवा के नाम पर लिए गए। कोई भी इस सेवा के बदले पैसे देने से मना नहीं करता। लेकिन उस परिवार को जो पर्ची दी गई, उस पर सुकृत सेवा मंडल लिखा हुआ है। उस पर किसी तरह का रजिस्ट्रेशन नंबर और जीएसटी नंबर नहीं है। उस पर्ची पर दो फोन नंबर पाए गए। फोन नंबर 2427093 की जब जांच की गई तो वह श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल, तिकोना पार्क फरीदाबाद का निकला। इसी तरह मोबाइल नंबर 9891416254 संजय खत्री के नाम पर पाया गया। इस पर्ची पर क्रमांक नंबर यानी रसीद का नंबर 170 पाया गया है।

पहला सवाल तो यही है कि सुकृत सेवा मंडल की पर्ची पर श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल का नंबर कैसे दिया जा सकता है। सुकृत सेवा मंडल किसी भी रूप में श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल से जुड़ी हुई संस्था नहीं है। ऐसे में दूसरी संस्था किसी और संस्था के दफ्तर का फोन नंबर कैसे दे सकती है। इसका अर्थ यह हुआ कि सुकृत सेवा मंडल पर की पर्ची पर 500 रुपये या जितने की भी रसीदें काटी जा रही हैं, वो पैसा श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल के खाते में न जाकर सुकृत सेवा मंडल चलाने वालों की जेब में जा रहा है। यह गैरकानूनी है। सुकृत सेवा मंडल किसी तरह की रजिस्टर्ड संस्था नहीं है, अगर वह रजिस्टर्ड संस्था होती तो उसका रजिस्टर्ड नंबर पर्ची पर जरूर होता। जो पर्ची मृत मरीज के परिवार को दी गई है, उस पर क्रमांक नंबर 170 पड़ा है। यानी उससे पहले 169 पर्चियां कट चुकी हैं। उसके माध्यम से कितने पैसे सुकृत सेवा मंडल चलाने वालों की जेब में गए, कोई नहीं जानता। इस मामले में गहन पुलिस जांच ही इन पैसों का हिसाब-किताब सामने ला सकती है।

पर्ची पर दूसरा नंबर संजय खत्री से संबंधित है। संजय खत्री श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल के निलंबित प्रधान कंवल खत्री के भतीजे हैं। अगर इस मामले की गहराई में जाया जाए तो जो तस्वीर उभर रही है, उसके मुताबिक इस शव वाहन का संचालन एक तरह से खत्री परिवार ही कर रहा है। लेकिन शव वाहन की सेवा के नाम पर जो पर्ची काटी जा रही है वो सुकृत सेवा मंडल की है, जबकि वो पर्ची भी श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल गई होगी।

इनका ये कहना है

इस संबंध में मजदूर मोर्चा ने जब श्रीराम धर्मार्थ चेरिटेबल सोसायटी के उपप्रधान विशाल भाटिया से पूछा कि क्या वे सुकृत सेवा मंडल नाम की किसी संस्था को जानते हैं तो उन्होंने कहा कि वे ऐसी किसी संस्था को नहीं जानते। हमारे अस्पताल या सोसायटी से इस नाम की संस्था का कोई संबंध नहीं है। हमारे रेकॉर्ड में भी इस संस्था का अस्तित्व नहीं है।

मजदूर मोर्चा ने इस संबंध में श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल के संस्थापक सदस्य एस.एम. हाशमी से जब पूछा तो उन्होंने भी सुकृत सेवा मंडल नाम की ऐसी किसी संस्था को जानने से इनकार कर दिया। हाशमी ने कहा कि वो खुद हैरान हैं कि ऐसी किसी संस्था का श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल से कोई संबंध भी है। उन्होंने कहा कि श्रीराम के नाम पर चलने वाली संस्था के साथ इस तरह की धोखाधड़ी की वो कल्पना भी नहीं कर सकते। मैंने जब इस अस्पताल को स्व. बृजमोहन भाटिया और सरदार शेर सिंह के साथ मिलकर खड़ा किया था तो हमारे दिल-दिमाग में इससे पैसे कमाने का दूर-दूर तक वास्ता नहीं था। हमने इसे गरीबों की मदद के लिए खड़ा किया था। हमें जो भी डोनेशन मिले हैं वे श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल के नाम पर मिले हैं, जिसका रिकॉर्ड मौजूद है। लेकिन ये सुकृत सेवा मंडल बीच में कहां से आया, हमें इसका पता नहीं है।

पाठकों को याद होगा कि श्रीराम धर्मार्थ सोसायटी को अब रजिस्ट्रार सोसायटी का प्रशासक चला रहा है। प्रशासक ने अस्पताल खुलवाया। प्रशासक ने अपनी मदद के लिए एक कमेटी बनाई, जिसमें कंवल खत्री भी है। शव वाहन के लिए जिस संस्था की पर्ची काटी जा रही है, उस पर एक फोन नंबर कंवल खत्री के भतीजे का है। इस तरह सुकृत सेवा मंडल और कंवल खत्री की साठगांठ के ये पुख्ता सबूत हैं।

पुलिस जांच और राजनीतिक रसूखदारी

कोविड सेंटर की आड़ में श्रीराम अस्पताल को कथित तौर पर जबरन खोले जाने के मामले की पुलिस जांच शुरू हो गई है। इस संबंध में कोतवाली पुलिस ने लोकल धर्मगुरु पीर जगन्नाथ का बयान भी दर्ज किया। सूत्रों ने बताया कि पीर जगन्नाथ ने पुलिस को दिए बयान में कहा है कि पिछले साल 20 जून को श्रीराम धर्मार्थ चेरिटेबल सोसायटी के दोनों पक्षों ने संस्था की चाबियां मेरे हवाले कर दी थीं। जो अभी भी मेरे पास सुरक्षित हैं। मैंने वो चाबी अभी तक किसी को नहीं दी है। हालांकि रजिस्ट्रार सोसायटी के प्रशासक ने मुझसे चाबियां मांगीं थी लेकिन दोनों पक्षों की सहमति न होने के कारण मैंने वो चाबियां प्रशासक को भी नहीं दीं।

पुलिस ने इस संबंध में कंवल खत्री का बयान भी लिया है। सूत्रों ने बताया कि कंवल खत्री ने पुलिस को दिए अपने बयान में खुद को पूर्व प्रधान बताया है। संस्था के उप प्रधान विशाल भाटिया की अस्पताल को कोविड सेंटर में बदलने की अर्जी के बाद कंवल खत्री ने प्रशासन को जो अर्जी दी थी, उसमें खुद को प्रधान नहीं लिखा था। लेकिन एमसीएफ के अतिरिक्त निगमायुक्त इंद्रजीत कुलड़िया ने श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल को कोविड सेंटर के लिए खोले जाने के संबंध में जो सरकारी पत्र जारी किया है, उसमें कंवल खत्री को प्रधान लिखा गया है। इस तरह यह स्थिति अब पूरी तरह साफ हो गई है कि एमसीएफ ने अपने राजनीतिक आकाओं के कहने पर कंवल खत्री को प्रधान लिखा और उसके लिए अस्पताल में घुसने का रास्ता साफ किया। यह मामला आगे चलकर अदालत में एमसीएफ के लिए मुसीबत पैदा करने वाला है।

सूत्रों ने बताया कि रजिस्ट्रार सोसायटी के प्रशासक संतपाल ने पुलिस को दिए बयान में कहा कि कोविड की वजह से अस्पताल को खोला गया। मेरे पास इस चीज की पावर रजिस्ट्रार सोसायटी की तरफ से है कि मैं बंद अस्पताल को खुलवा सकता हूं। लेकिन यहां सवाल यह उठ रहा है कि जिन चाबियों को पुलिस ने अपने सामने पीर जगन्नाथ के पास पिछले साल रखवाई थीं, कोई प्रशासक बिना उन चाबियों के डुप्लीकेट चाबी बनवाकर अस्पताल कैसे खुलवा सकता है। प्रशासक के अधिकार सोसायटी एक्ट में तय हैं। इस मामले में अब प्रशासक के अधिकारों का सच भी जल्द ही सामने आएगा।

बता दें कि पिछले साल दोनों पक्षों में विवाद होने के बाद पुलिस आई थी और पुलिस के सामने ही वो चाबियां पीर जगन्नाथ को सौंपने का फैसला दोनों पक्षों ने किया था। पुलिस अब इस बात की जांच कर रही है कि कोविड सेंटर खोलने के लिए एक पक्ष कहीं अस्पताल में जबरन तो नहीं घुसा।

मुख्यमंत्री से क्यों मिलवाया सीमा ने

भाजपा विधायक सीमा त्रिखा हाल ही में शहर के कुछ व्यापारी नेताओं को खट्टर से मिलवाने ले गई थीं। उस प्रतिनिधिमंडल में कंवल खत्री और जोगिन्द्र चावला भी थे। फोटो खींचने के समय विधायक सीमा त्रिखा ने अपने साथ ही कंवल खत्री और जोगिन्द्र चावला को खड़ा किया। इस मुलाकात की खबर हमारे देखी-सुनी कॉलम में भी पढ़ें। दरअसल, इस मुलाकात और फोटो के जरिए फरीदाबाद के अफसरों को संकेत देने की कोशिश की गई है कि इन दोनों को भाजपा विधायक का संरक्षण प्राप्त है। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि हरियाणा सरकार श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल को अवैध निर्माण मानती है और इसी आधार पर एमसीएफ ने इसे सील कर दिया था। अब सवाल यह है कि एक भाजपा विधायक अवैध कब्जाधारियों को सीएम से मिलवाकर क्या साबित करना चाहता है। एमसीएफ कंवल खत्री से तिकोना पार्क की इस जमीन की लीज के कागजात मांग चुका है लेकिन कंवल खत्री उन कागजात के एमसीएफ में पेश नहीं कर सके। प्रशासनिक सूत्रों ने बताया कि श्रीराम अस्पताल का कोविड सेंटर नाकाम साबित होने के बाद अब यहां ओपीडी की अनुमति देने के लिए राजनीतिक दबाव बनाया जा रहा है। लेकिन प्रशासन यह समझ नहीं पा रहा है कि रजिस्ट्रार सोसायटीज फरीदाबाद और स्टेट रजिस्ट्रार सोसायटी चंडीगढ़ में श्रीराम धर्मार्थ का केस लंबित होने की वजह से वे यहां पर ओपीडी चलाने की अनुमति कैसे दे सकते हैं। भाजपा विधायक ने अधिकारियों से कहा है कि वे किसी भी तरह इस समस्या का हल निकाले। सूत्रों ने बताया कि सीमा त्रिखा ने इस संबंध में आरएसएस के पदाधिकारी गंगाशंकर के साथ बैठक भी रखी थी, जिसमें यहां ओपीडी चलवाने के लिए आरएसएस के रसूख का भी इस्तेमाल करने की रणनीति पर चर्चा हुई। बताया जाता है कि कंवल खत्री ने इन लोगों को आश्वस्त किया है कि चाहे जितना पैसा खर्च हो जाए, यहां ओपीडी चलवा दी जाए।

देखी-सुनी

खबरीलाल

मीडिया कोऑर्डिनेटरों के भरोसे खट्टर

आखिर खट्टर सरकार को अपने लिए कितने मीडिया सलाहकार चाहिए? मुख्यमंत्री के चार मीडिया सलाहकारों के बाद अब खट्टर सरकार ने सीएम की मदद के लिए पाँच मीडिया कोऑर्डिनेटर भी नियुक्त कर दिए हैं। हर ज़िले में डीपीआरओ पहले से ही है। चंडीगढ़ और दिल्ली में लोकसंपर्क विभाग का एक बहुत बड़ा अमला अलग से है। आप समझ सकते हैं कि खट्टर सरकार किस तरह मीडिया सलाहकारों पर आश्रित होती जा रही है। ये जो पाँच मीडिया कोऑर्डिनेटर नियुक्त किए गए हैं, उनकी सैलरी, दफ्तर, स्टाफ़ कहाँ से आएगा? ज़ाहिर है जनता के टैक्स का पैसा इन पर खर्च होगा। अगर प्रदेश के डीपीआरओ और पूरा लोक संपर्क विभाग खट्टर सरकार का प्रचार नहीं कर पा रहे हैं तो फिर इस विभाग को बंद करके सारी कमान मीडिया सलाहकारों और मीडिया कोऑर्डिनेटरों को सौंप दी जाए। फ़रीदाबाद के लिए मुकेश वशिष्ठ को सीएम का मीडिया कोऑर्डिनेटर बनाया गया है। आखिरकार वह भी तो सीएम की पब्लिसिटी के लिए अख़बारों और टीवी पर निर्भर रहेंगे। यही काम डीपीआरओ का भी है। सरकार ने मीडिया कोआर्डिनेटरों की नियुक्ति करते हुए यह नहीं बताया है कि वे राज्य के विभिन्न शहरों में बैठकर क्या घास खोदेंगे।...लगता है खट्टर सरकार ग़लतफ़हमी की शिकार है कि वो मीडिया सलाहकारों और मीडिया कोआर्डिनेटरों के भरोसे जनता में अपनी छवि बदल लेगी या मजदूर मोर्चा जैसे निष्पक्ष अखबार सरकार को आईना दिखाने का काम बंद कर देंगे।

चोला और पाला बदलते व्यापारी नेता

फरीदाबाद के व्यापारी नेता चोला और पाला बदलने में माहिर होते जा रहे हैं। कल तक सीएम खट्टर के कटु आलोचक व्यापारी नेता हाथ जोड़कर खट्टर के आगे नतमस्तक हैं। इसे भाजपा का डर कहें या और कोई बात लेकिन व्यापारी नेता चोला तो बदल ही रहे हैं। अभी जब हरियाणा सरकार ने लीज वाली दुकानों का मालिकाना हक देने का ऐलान किया तो फरीदाबाद के कुछ व्यापारी नेता भाजपा के झंडे तले चहकते दिखे। बडखल की भाजपा विधायक सीमा त्रिखा कुछ व्यापारी नेताओं को बटोर कर दिल्ली में हरियाणा भवन खट्टर से मिलाने ले गईं, ताकि खट्टर का धन्यवाद किया जा सके। इस प्रतिनिधिमंडल में बहुत सारे व्यापारी नेता थे जो पहले खट्टर और मोदी को उल्टा सीधा बोलते रहे हैं। वकील जोगिन्द्र चावला भी व्यापारियों के प्रतिनिधि बनकर पहुंचे। जबकि जोगिन्द्र चावला का बाकायदा एक वीडियो वायरल है, जिसमें वो खट्टर और मोदी को गलत बोलते दिख रहे हैं। इस प्रतिनिधिमंडल में जगदीश भाटिया भी थे जो पूर्व भाजपा विधायक स्व कुंदन लाल भाटिया के पुत्र हैं। आजकल एक मंदिर की गद्दी संभाल रहे हैं लेकिन व्यापारी नेता बनकर खट्टर दरबार में पहुंचे। जगदीश भाटिया भी खट्टर सरकार के कटु आलोचक रहे हैं। उनके भाई चन्द्र भाटिया ने भाजपा से बगावत कर चुनाव लड़ चुके हैं। इस प्रतिनिधिमंडल में जोगिन्द्र चावला के साथ श्रीराम धर्मार्थ चेरिटेबल सोसायटी के निलंबित प्रधान कंवल खत्री भी थे। इन कथित व्यापारी नेताओं के ड्राइवरों तक को इस प्रतिनिधिमंडल में शामिल किया गया था।...अब बाकी व्यापारी नेताओं के बारे में क्या बताएं। समझा जाता है कि सरकार की गिरती जा रही लोकप्रियता को बचाने के लिए भाजपा आला कमान ने सीमा त्रिखा जैसे विधायकों को इस टोटके को अंजाम देने के लिए लगाया है। शहरी क्षेत्रों में धीरे-धीरे व्यापारी कांग्रेस की तरफ मुड़ रहे हैं, खासकर पंजाबी बिरादरी के व्यापारियों का रुझान बदल रहा है।

प्रेस कॉन्फ्रेस में तारीफों के पुल

डीसी फरीदाबाद यशपाल यादव ने 2 जून को आनलाइन प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाई। प्रेस कॉन्फ्रेंस का विषय पहले से तय नहीं था तो जाहिर है डीसी ने अपनी उपलब्धियों के बारे में पत्रकारों को आनलाइन आमंत्रित किया था। लेकिन डीसी से सवाल पूछने वाले पत्रकार भाई डीसी की तारीफ भी करते नहीं थके। किसी ने उनके ट्रेनिंग से फौरन आकर चार्ज संभालने को याद दिलाया तो किसी पत्रकार ने कहा कि उन्होंने कितने बेहतरीन तरीके से कोरोना काल में शहर और गांव के हालात संभाले। डीसी मुस्कुरा कर सुनते रहे। तारीफ किसे पसंद नहीं आती। किसी पत्रकार ने डीसी को घेरने वाले सवालों की बौछार नहीं की। प्राइवेट अस्पतालों की लूट की बात पत्रकारों ने उठाई लेकिन यह नहीं पूछ सके कि किसी बड़े अस्पताल पर अब तक कार्रवाई क्यों नहीं हुई। डीसी का इस सवाल पर जवाब यही होता न कि अभी जांच करा रहे हैं। तो फिर बल्लभगढ़ में जिस प्राइवेट अस्पताल पर कार्रवाई का ढिंढोरा पीटा गया तो वह क्या था, क्या उसी तरह की गड़बड़ी एशियन अस्पताल, मेट्रो अस्पताल, फोर्टिस और सर्वोदय नहीं कर रहे हैं तो उन पर कार्रवाई क्यों नहीं। बेशक आप सांकेतिक कार्रवाई ही करते लेकिन लूट के इन बड़े अड्डों पर भी कार्रवाई तो बनती है।

फरीदाबाद से चंडीगढ़ तक एक कैलेंडर की चर्चा

फरीदाबाद से लेकर चंडीगढ़ तक के सरकारी क्षेत्रों में एक कैलेंडर की इन दिनों बहुत चर्चा है। हाल ही में एक अधिकारी ने खबरीलाल को जब यह कैलेंडर दिखाया तो खबरीलाल भी दंग रह गया। मजदूर मोर्चा ने बहुत पहले एनआईटी इलाके में नारंग परिवार के सरकारी संपत्तियों पर लूट-खसोट की खबर प्रकाशित की थी। इस कैलेंडर में उसी नारंग परिवार पर हमला किया गया है। किसी मुद्दे को उठाने की यह तरकीब बहुत जबरदस्त है। फरीदाबाद के कई सरकारी दफ्तरों और शहर के कारोबारियों के यहां इस कैलेंडर के दर्शन हुए हैं। आरटीआई एक्टिविस्ट और समाजसेवी रमेश छाबड़ा की तरफ से निकाले गए इस कैलेंडर एक तरफ तो खट्टर सरकार की तारीफों के पुल बांधे गए हैं तो दूसरी तरफ उनसे पूछा गया है कि इतनी ईमानदार सरकार नारंग परिवार की लूट-खसोट पर चुप क्यों हैं। अधिकारियों का कहना है कि इस कैलेंडर पर वो संज्ञान भी लें तो किस चीज का। हालांकि इसमें तमाम आरोप लगाए गए हैं। कैलेंडर के आधार पर कोई कार्रवाई नहीं हो सकती, अलबत्ता इसे जारी करने वाले ने नारंग परिवार की इज्जत को धो डाला है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06